केन्द्रीय विद्यालय चिकोडी

Kendriya Vidyalaya Chikodi

(An Autonomous body under MHRD) Government of India

राजभाषा

पत्रिका

सत्र 2019-20

केन्द्रीय विद्यालय चिकोडी

राजभाषा – पत्रिका सत्र 2019-20

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

अध्यक्ष

सुधीर शर्मा
प्रभारी प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय चिकोडी

श्री सोहन लाल
सचिव - राजभाषा कार्यन्वयन समिति
केन्द्रीय विद्यालय चिकोडी

श्री रोहित चौधरी
सदस्य-राजभाषा कार्यान्वयन समिति
केन्द्रीय विद्यालय चिकोडी

अध्यक्ष महोदय का सन्देश

ಡಾ|| ಎಸ್. ಬಿ. ಬೊಮ್ಮನಹಳ್ಳಿ ಭಾ.ಆ.ಸೇ.
Dr. S. B. Bommanahalli I.A.S.

ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ

ಜಿಲ್ಲಾಧಿಕಾರಿ ಹಾಗೂ ಜಿಲ್ಲಾ ದಂಡಾಧಿಕಾರಿ
ಬೆಳಗಾವಿ ಜಿಲ್ಲೆ, ಬೆಳಗಾವಿ-590001
Deputy Commissioner and
District Magistrate, Belagavi, Karnataka
Off : 0831-2407200,2407273 ,
Fax : 0831-2452644 Resi : 2407222
E-mail : deo.belagavi@gmail.com

अध्यक्ष की कलम से

संदेश

मुझे यह जानकार अत्यंत प्रसन्नता हो रही है की केन्द्रीय विद्यालय चिक्कोड़ी द्वारा वर्ष 2019-20 हेतु राजभाषा पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है । हिन्दी भारतीय संस्कृति की आत्मा है और अभिव्यति का सबसे प्रभावी माध्यम है । इसके अतिरिक्त यह दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपि है ।

में केन्द्रीय विद्यालय चिक्कोड़ी के विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कार्मिकों को रचनात्मक अभिव्यक्ति हेतु मंच प्रदान करने के इस प्रयास के लिए, संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई देता हूँ ।

अध्यक्ष

सहायक आयुक्त का सन्देश

ಶ್ರೀ ರವೀಂದ್ರ ಕರಲಿಂಗಣ್ಣವರ ಕ.ಆ.ಎಸ್.
ಉಪ ವಿಭಾಗಾಧಿಕಾರಿ ಹಾಗೂ
ಉಪ ವಿಭಾಗ ದಂಡಾಧಿಕಾರಿಗಳು,
ಚಿಕ್ಕೋಡಿ ಉಪ ವಿಭಾಗ, ಚಿಕ್ಕೋಡಿ

Shri Ravindra Karalingannavar K.A.S.
ASSISTANT COMMISSIONER &
SUB-DIVISIONAL MAGISTRATE,
CHIKODI SUB DIVISION, CHIKODI.

Tel. : (Off.) 08338 - 272132, (Resi.) 08338 - 272167, (Fax) 08338 - 272132, e-mail : ac.chikodi@gmail.com

Scanned with CamScanner

शुभ संदेश

हार्दिक प्रसन्नता का विषय है कि केंद्रीय विद्यालय चिक्कोड़ी द्वारा अपनी राजभाषा पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है । हिन्दी हमारी राजभाषा है और हिन्दी पत्रिकाओं का प्रकाशन हिन्दी के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका लेखकों को उनके स्वतंत्र विचार प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करेगी जो कि हिन्दी के उन्नयन के लिए एक सराहनीय प्रयास है ।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करते हुए इससे जुड़े सभी छात्रों, शिक्षकगणों और प्राचार्य को शुभकामनाएँ देता हूँ ।

रवीन्द्र करलिंगन्नावर

सहायक आयुक्त एवं नामित अध्यक्ष
केन्द्रीय विद्यालय,चिक्कोड़ी

केन्द्रीय विद्यालय
विधायक राजकीय मॉडल विद्यालय भवन
विपरीत पंचायत कार्यालय
निकट मिनी विधान सौध
चिकोड़ी ज़िला बेलगाम
कर्नाटक – ५९१२०१

Kendriya Vidyalaya
MLA Govt. Model School Building
Opposite Taluka Panchayat Office
Near Mini Vidhana Soudha
Chikodi Distt. Belgaum
Karnataka – 591201

Phone: 08338 - 273477
E-Mail: kvchikodi@yahoo.com

सन्देश

केन्द्रीय विद्यालय चिक्कोड़ी की अपनी प्रथम राजभाषा पत्रिका का प्रकाशन नई पीढ़ी में रचनाधर्मिता का बीजारोपण ही नहीं, नैतिकता एवं संस्कारों को आत्मस्थ करने की सार्थक पहल भी है ।

राजभाषा पत्रिका के इस अंक के माध्यम से विद्यार्थियों तथा शिक्षकों ने अपनी लेखन प्रतिभा का परिचय , रचनात्मक कविताओं, सारगर्भित लेखन द्वारा प्रस्तुत किया है ।

राजभाषा पत्रिका के संपादक मंडल , शिक्षकों तथा विद्यार्थियों को मैं इसके लिए हार्दिक बधाई देता हूँ ।

सुधीर शर्मा
प्रभारी प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय चिक्कोड़ी

सम्पादक – मण्डल

 सोहन लाल **izf'kf{kr Lukrd f'k{kd – हिन्दी**	हिन्दी विभाग
 रामप्रसाद भी काम्बले **कंप्यूटर इंस्ट्रक्टर**	डिजाइन एवं संग्रथंन

सम्पादक की कलम से

यह बहुत ही खुशी एंव गर्व की बात है कि विद्यालय अपनी हिन्दी राजभाषा पत्रिका 'सृजन' का प्रकाशन कर रहा है | विद्यालय में हिन्दी राजभाषा के प्रति छात्रों,कर्मचारियों एंव अधिकारियों का उत्साह देखने लायक है | यह पत्रिका बच्चों की रचनात्मक्ता एंव कर्मचारियों की कल्पना शक्ति का संगम है |

भाषा के निर्माण में प्रत्येक व्यक्ति का कुछ न कुछ योगदान अवश्य रहता है | इस संबंध में इमरसन का कथन है कि "भाषा वह नगर है जिसे खड़ा करने में हर व्यक्ति ने कोई न कोई पत्थर लगाया है |" भाषा भाव और विचारों का माध्यम मात्र नहीं है बल्कि यह व्यक्ति, समाज, तथा राष्ट्र को सुदृढ़ और जीवंत बनाने का सर्वमान्य, सशक्त साधन भी है | सशक्त भाषा केवल व्यक्ति का विकास ही नहीं करती, अपितु राष्ट्र के विकास में भी सहायक होती है | अतः राजभाषा हिन्दी को समूह, व्यापक और लोकप्रिय बनाने के लिए हम सबका सक्रिय योगदान बहुत आवश्यक है और शिक्षाकर्मी होने के नाते हमारा यह परम कर्तव्य है कि हम शिक्षक स्वयं प्रेरित होकर हिन्दी को प्राथमिकता दें |

विद्यार्थियों को एकाधिक भाषा का व्यावहारिक ज्ञान कराने हेतु राजभाषा पत्रिका 'सृजन' का प्रकाशन किया जाना पत्रिका के महत्व को इंगित करता है | इसमें प्रकाशित हिन्दी की रचनाएँ विद्यार्थियों को आत्म-चिंतन एंव आत्म-परीक्षण के प्रेरित ही नहीं प्रोत्साहित भी करेगी, ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है |

इस पत्रिका के प्रकाशन में अपना अमूल्य योगदान देने वाले सभी छात्रों, अभिभावकों, कर्मचारियों, और अधिकारियों का ह्रदय की अतल गहराइयों से आभार व्यक्त करते हुए अपेक्षा करता हूँ कि राजभाषा हिन्दी के प्रति आपकी सकारात्मक सोच अनवरत जारी रहेगी|

हिन्दी मेरी भाषा है, हिन्दी मेरी आशा है |
हिन्दी का उत्थान करना, यही मेरी जिज्ञासा है |

राजभाषा पत्रिका 'सृजन' पढ़कर अपनी राय जरूर लिखिए
सुझाव का स्वागत होगा |
संपर्क करें
सोहन लाल, स्नातक शिक्षक - हिन्दी
फोन न. -9636526374, ईमेल-

सोहन लाल
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक - हिन्दी
केंद्रीय विद्यालय चिक्कोड़ी

नारी सशक्तिकरण - हकीकत या ख्वाब

नारी एक माँ, एक बहन, एक पत्नी, एक देवी और न जाने कितने रूपों में हमारे समाज की एक विस्मयी पहचान है | हम उसे मंदिर में एक देवी के रूप में पूजते है तो घर में एक माँ के रूप में | नारी की इसी महत्वता के कारण ही हमारे समाज में अलग ही पहचान है | शायद इसलिए नारी को महान भी कहा जाता है |

लेकिन रुकिये ? यहाँ एक अहम प्रश्न जो मेरे दिमाग में खड़ा होता है कि क्या नारी सचमुच में हमारे देश में महानता की पहचान है ? या ये सब एक दिखावा है | कुछ लोगों को ये बात शायद काँटे की तरह चुभ जाती है कि नारी सम्मान आज के समाज में सिर्फ दिखावा बनकर रह गया है | अगर नहीं तो समाज में बढ़ते नारी अपराधों के लिए फिर जिम्मेदार कौन है ? क्या हम नहीं ? अगर नहीं तो ये सब हो क्यों रहा है और अगर हाँ तो हम कुछ कर क्यों नहीं पा रहें है |

देश में बढ़ते हुए बलात्कार, महिला यौन शोषण, दहेज उत्पीड़न जैसी बढ़ती घटनाएँ इस बात की परिचाय है कि हमारे भारतीय समाज की नैतिकता की जड़ें खोखली हो चुकी है | अक्सर बड़ी लड़कियों के पहनावे पर सवाल उठाने वाले बुद्धिजीवी इस बात का जवाब क्यों नहीं दे पते हैं कि 4 साल की हिमाचल की गुड़िया या दिल्ली के गांधी नगर की मुन्नी ने कौन से ऐसे कपड़े पहने थे जो इतने संकीर्ण थे कि उन्होने मानवीय मूल्यों को उखाड़ फेंक देने वाले ऐसे अपराध करने की प्रवृति को जन्म दिया | अपनी सुरक्षा में 10 जवानो से घिरे नेतागण अपनी मीठी जुबान खोलने से पहले ये क्यों भूल जाते है कि उस परिवार या समाज पर उनकी इस गलत बयानबाजी का क्या असर पड़ेगा | दोस्तों आज जरूरत सोशल मीडिया पर बैठकर संवेदना जाहिर करने की नहीं अपितु हाथ में मानवता का ध्वज थामकर समाज में नारियों के प्रति सम्मान की भावना पुनः जागृत करने की है ताकि देश में हर निर्भया, हर मुन्नी तथा गुड़िया को इंसाफ मिल सके | वरना महिला सशक्तिकरण सचमुच में एक ख्वाब बनकर ही रह जाएगा जो हमारे भारतीय समाज की नींव को हिला कर रख देगा |

विकास

प्राथमिक शिक्षक

केंद्रीय विद्यालय

चिक्कोड़ी

धैर्य

टीचर ने क्लास के सभी बच्चों को एक खूबसूरत टॉफ़ी दी और फिर एक अजीब बात कही:
सुनो, बच्चों! आप सभी को दस मिनट तक अपनी टॉफ़ी नहीं खानी है और ये कहकर वो क्लास रूम से बाहर चले गए।

कुछ पल के लिए क्लास में सन्नाटा छाया था, हर बच्चा उसके सामने पड़ी टॉफ़ी को देख रहा था और हर गुज़रते पल के साथ खुद को रोकना मुश्किल होरहा था। दस मिनट पूरे हुए और टीचर क्लास रूम में आ गए। समीक्षा की। पूरे वर्ग में सात बच्चे थे, जिनकी टॉफ़ीयां ज्यों की त्यों रखी थी,जबकि बाकी के सभी बच्चे टॉफ़ी खाकर उसके रंग और स्वाद पर टिप्पणी कर रहे थे। टीचर ने चुपके से इन सात बच्चों के नाम को अपनी डायरी में दर्ज कर दिए और उसके बाद बच्चों को पढाना शुरू किया।

इस शिक्षक का नाम प्रोफेसर वाल्टर मशाल था।

कुछ वर्षों के बाद प्रोफेसर वाल्टर ने अपनी वही डायरी खोली और सात बच्चों के नाम निकाल कर उनके बारे में शोध शुरू किया। एक लंबे संघर्ष के बाद, उन्हें पता चला कि उन सातों बच्चों ने अपने जीवन में कई सफलताओं को हासिल किया है और अपने क्षेत्र में बहुत ज्यादा सफल हैं। प्रोफेसर वाल्टर ने अपने बाकी वर्ग के छात्रों की भी समीक्षा की और यह पता चला कि उनमें से ज्यादातर एक आम जीवन जी रहे थे, जबकी कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्हें सख्त आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों का सामना करना पड रहा था।

इस सभी प्रयास और शोध का परिणाम प्रोफेसर वाल्टर ने एक वाक्य में निकाला और वह यह था:

"जो आदमी दस मिनट तक धैर्य नहीं रख सकता, वह जीवन में कभी आगे नहीं बढ़ सकता।"

इस शोध को दुनिया भर में शोहरत मिली और इसका नाम "मार्श मेलो थ्योरी" रखा गया था क्योंकि प्रोफेसर वाल्टर ने बच्चों को जो टॉफ़ी दी थी उसका नाम "मार्श मेलो" था। यह फोम की तरह नरम थी।

इस थ्योरी के अनुसार दुनिया के सबसे सफल लोगों में कई गुणों के साथ एक गुण "धैर्य"" पाया जाता है क्योंकि यह ख़ूबी इंसान के बर्दाश्त की ताक़त को बढ़ाती है जिसकी बदौलत आदमी कठिन परिस्थितियों में निराश नहीं होता और वह एक असाधारण व्यक्तित्व बन जाता है।

धैर्य ही जीवन का सार है।

महेश जांगिड़
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक
(विज्ञान)

<u>फिर खेलूँ मैं</u>

माँ मुझको बचपन लौटा दो,

है चाह मुझे फिर,

खेलूँ मैं,

वापस बन जाओ मेरे खेल खिलौने,

उन दिनों सा गोदी में,

झूलूँ मैं,

इतनी सी ख्वाहिश पूरी कर दो,

कि बचपन में फिर,

जी लूँ मैं,

माँ मुझको बचपन लौटा दो,

है चाह मुझे फिर,

खेल में।

शेष दिवाकर कर नन्हा,

हर बात सीखा दो,

मुझे बता दो,

जैसा खेला करता था,

बस मुझको इतना सा दे दो,

कि बचपन सा फिर,

रिझू मैं,

माँ मुझको बचपन लौटा दो,

है चाह मुझे फिर,

खेलूँ मैं।

माँ तुमसे स्नेह बहुत है,

बस तुम ही मुझे जानते हो,

डाट-डपट कर मुझे सुला दो,

कि खा थपकी फिर,

सोलूँ मैं,

माँ मुझको बचपन लौटा दो,

है चाह मुझे फिर,

खेलूँ मैं।।

रिसव कुमार टण्डन

(प्राथमिक शिक्षक)

किशोर पीढ़ी अवस्था एवं मां बाप का दायित्व

आज हम जिस समाज एवं पर्यावरण में रह रहे हैं उसमें आजकल दो चीजों पर हमें ध्यान देने की सख्त जरूरत है एक है प्रदूषित पर्यावरण एवं दूसरा विचारों से संबंधित दूषित समाज | ऐसा प्रतीत होता है कि आपसी संबंधों में स्वच्छता और ईमानदारी सिमट गई है खास तौर पर इस ओर ध्यान देने की जरूरत है कि हमारी किशोर पीढ़ी क्या सीख रही है? और क्या कर रही है? क्या वह एक दूसरे का सम्मान तहे दिल से कर रही है या छलावा कर रही है अच्छा बनने का | आजकल हम देखते हैं कि एक दूसरे का उपहास एवं पीड़ित और प्रताड़ित करना किशोरों का शौक बनता जा रहा है उनमें एक दूसरे से बदला लेना आपस में द्वेष, घृणा की भावना प्रबल होती जा रही है इस तरीके की भावना एवं चरित्र देखकर कहीं ना कहीं स्पष्ट हो जाता है कि परवरिश में कोई ना कोई कमी रह गई है | किशोर पीढ़ी जो बाल एवं युवा अवस्था के बीच की कड़ी है बहुत ही नाजुक एवं लचीली होती है जैसे गीली मिट्टी की तरह जिसे कुम्हार मनचाहे आकार में बना सकता है उसी तरह पारिवारिक दायित्व भी किशोर पीढ़ी को स्वच्छ एवं ईमानदार चरित्र से उस के सपनों को आकार दे सकता है एवं उसके उज्जवल भविष्य को पंख दे सकता है | कहीं ना कहीं मां-बाप इस बात से अपना पल्ला नहीं झाड़ सकते हैं कि हमारी उसके भविष्य में क्या भागीदारी हो सकती है किंतु आज के किशोर की कौन सी परछाई सामने दिखाई दे रही है ? यह किस तरह का लाड़ प्यार है कि वह अपनी मनमानी पर उतर जाता है तथा परिजनों की भावनाओं की कोई कदर नहीं करता हमें उन सामाजिक कारणों एवं तत्वों को समझना एवं ढूंढना होगा | विभिन्न तरह के अपराधों में लिप्त किशोरों का बढता ग्राफ हमारी पारिवारिक दायित्वों की कमियों को इंगित कर रहा है | क्या उसे घर एवं बाहर की महिलाओं के साथ सम्मान और आदर के साथ पेश होना नहीं सिखाया जा रहा है? यह एक विडंबना ही तो है कि हम उसे पारिवारिक मूल्य नहीं सिखा पा रहे ना ही उसे परिवार के साथ जोड़ पा रहे हैं | वह एक अलग सी दुनिया बनाते जा रहे हैं जहां उनको हस्तक्षेप करने से झिल्लाहट होती है उन्हें ऐसा प्रतीत होता है कि हमारी निजी जिंदगी में दखल दिया जा रहा है इसका हल यह है कि हमें उनकी गतिविधियों पर ध्यान देना चाहिए और इस तरीके के प्रयास जिसमें उनको परिवार और उससे संबंधित विचारों से जोड़ा जा सके, करने होंगे | मां-बाप अपने इस दायित्व से पल्ला नहीं झाड़ सकते हैं | उसके वर्तमान को सुधारने एवं उसके उज्जवल भविष्य की जिम्मेदारी परिवार की है |

रवि सिंह
प्र.स्ना.शि.
कार्यानुभव

नारी की वेदना

बहुत किया ये जुल्म तुमने , सहती रही बस दिल थामे |
बढ़ती गयी लालसा तुम्हारी , फिर भी चुप थी ये मासूम नारी |
पर अब मैं सहूँगी अत्याचार नहीं , टूट चुका वो बाँध सब्र का और कष्ट स्वीकार नहीं ||

पहले मैंने माफ किया , पर इसे तुमने कमजोरी समझा |
तोड़ दी तूने पराकाष्टा सहनशीलता की , और मुझको इतना मजबूर किया |
रोक सकती मुझे अब कोई दीवार नहीं , टूट चुका वो बाँध सब्र का और कष्ट स्वीकार नहीं ||

मिली आजादी देश को पर , कितनी नारी अभी गुलाम है |
सभा में होता नारी का सम्मान ,पर घर में होता अपमान है |
होगा अब सम्मान से कोई खिलवाड़ नहीं , टूट चुका वो बाँध सब्र का और कष्ट स्वीकार नहीं ||

नारी का अधिकार जताकर , खुद को मर्द समझते हो |
जग जननी इस नारी का , क्या थोड़ा भी दर्द समझते हो |
हूँ मैं भी इंसान कोई पशु का अवतार नहीं, टूट चुका वो बाँध सब्र का और कष्ट स्वीकार नहीं ||

कभी सीता बनकर दी अग्निपरीक्षा , कभी दुर्गा बनकर बुराइयों का संहार किया |
कभी माँ बनकर दी प्रथम शिक्षा , तो कभी पत्नी बनकर प्यार किया |
तू ही बता क्या मैं बराबरी की हकदार नहीं , टूट चुका वो बाँध सब्र का और कष्ट स्वीकार नहीं ||

पारस
कक्षा - 8 ब

भारत का संविधान

जैसे पवित्र गीता और पाक कुरान है ,
वैसे ही अपने भारत का संविधान है |
देश के संचालन का लिखित विधान है ,
अव्यवस्थाओं को दूर करने का समाधान है |

इसमे निहित राष्ट्रीय अखंडता का बखान है ,
हर भारतवासी का यह मान-सम्मान है |
हमें मिला मौलिक अधिकारों का वरदान है ,
ये ग्रंथ धर्म निरपेक्षता की पहचान है |

इससे मौलिक कर्तव्यों का मिला संज्ञान है ,
इसके निर्माण में बारह समितियों का अवदान है |
दो साल,ग्यारह महीने और अठारह दिनों में बना ये सुजान है ,
छब्बीस नवम्बर को लाया ये नया विहान है |

ईश्वर ने जो लिखा वो तो विधि का विधान है ,
यहाँ भारत के सपूतों ने रचा भारत का संविधान है |
भारत में यही प्रार्थना और यही औज़ार है '
यह संविधान है यह अपना संविधान है |

मान्यता

कक्षा - 8 ब

भ्रष्टाचार

हिलने लगी धरती, आने लगे तूफान
जब आया भारत में भ्रष्टाचार ।
पहले इसने किया नेताओं को भ्रष्ट
फिर हुआ आम आदमी त्रस्त
दूषित हुई धरती, प्रदूषित हुआ आसमान
जब आया भारत में भ्रष्टाचार ।
फैल गया विष जैसे भारत में सारे
अब भारत को कौन उबारे ।
रावण जैसा भ्रष्टाचार, भर देता अहंकार
मस्तिष्क को वश में है! कर लेता यह भ्रष्टाचार
मंहगाई, मिलावट, कालायन है इसके प्रकार
हटाओ भ्रष्टाचार -
अब हर आदमी की है
यही पुकार । अब तो हर जगह हो गया
है भ्रष्टाचार! पड़ोसी भी हो गये है भ्रष्ट
हम भारत के बच्चे, प्रण करते आज
हम मिटाएंगे इसे और फिर बनाएगे नया
समाज, फिर बनाएगें नया समाज!

निश्चिता

कक्षा - 7 अ

ज़िंदगी की कहानी

चलता रहूँगा पथ पर चलने में माहिर बन जाऊंगा
या तो मंजिल मिल जायेगी या अच्छा मुसाफिर बन जाऊंगा !!

नाकामयाब लोग दुनिया के डर से अपना फैसला बदल देते हैं
और कामयाब लोग अपने फैसले से पूरी दुनिया बदल देते हैं।
लोग आपके बारे में क्या सोचते हैं ,
अगर ये भी आप सोचेंगे तो फिर लोग क्या सोचेंगे |

काम करो ऐसा कि पहचान बन जाये ,
चले ऐसे कि निशान बन जाये |
अरे ज़िंदगी तो हर कोई काट लेता है |
अगर दम है तो ऐसे जियो कि मिसाल बन जाये |

अगर कुछ करना है तो भीड़ से हटकर चलो ,
भीड़ साहस देती है मगर पहचान छीन लेती है |

-: ज़िंदगी Worth है व्यर्थ नहीं :-

श्रद्धा गोरे

कक्षा - 8 अ

समय

समय है बहुत ही ख़ास

जो करता है मेहनत से काम

सफलता होती है उसके पास

समय कभी रुकता नहीं

समय किसी के आगे झुकता नहीं

समय आगे बढता जाए

कोई इसे रोक ना पाए

जो समय-समय पर अपना काम करे

जो मेहनत करने से ना डरे

हर काम में उसकी भगवान भी मदद करे

जो समय के महत्व को पहचाने

वह जीवन में कभी ना हारे

नाम -धैर्यशील

कक्षा - 6 अ

वीर भूमि कर्मभूमि

वीर भूमि कर्मभूमि

तुझे है वंदन शत-शत वन्दन

शौर्य का गुणगान यह करती

वीरो का निर्माण यह करती

अवतारों की बनी यह धरती

राम कृष्णा का धाम यह धरती

है शपथ तुम्हे उन बलिदानों की

जिनसे यह वसुधा मुक्त हुई

योद्धाओन का निर्माण करती हुई

वीर भूमि कर्मभूमि

तुझे है वंदन शत शत नमन ||||||

इशुराज

कक्षा - 7 ब

लोग जल जाते है

लोग जल जाते है

मेरी मुस्कान पर क्योकि

मैंने कभी दर्द की नुमाइश नहीं की |

जिंदगी से जो मिला कबूल किया

किसी चीज की फरमाइश नहीं की |

मुश्किल है समझ पाना मुझे क्योंकि

जीने के अलग है अंदाज मेरे

जब जहां जो मिला अपन लिया

ना मिला उसकी ख्वाहिश नहीं की |

माना की ओरो के मुकाबले

कुछ ज्यादा पाया नहीं मैंने,

पर खुश हूँ कि खुद को गिरा कर

कुछ उठाया नहीं मैंने ||||

अनुष्का प्र कल्याणशेट्टी

कक्षा-नवमी

कुछ तो सीखो

सूरज की किरणों से सीखो,

जगना और जगाना |

अध्यापक की वाणी से सीखो,

आत्मज्ञान बढ़ाना |

फूलों से तुम हँसना सीखो,

भवरों से तुम गाना |

वृक्षों की डाली से सीखो,

फल देकर झुक जाना |

मेहंदी के पत्तो से सीखो,

पीसकर रंग चढ़ाना|

सुई और धागों से सीखो,

बिछड़े भाई मिलाना |

वीरों के जीवन से सीखो,

देश के लिए मर मिट जाना |

नाम – रितेश चौगुले

कक्षा –चौथी ब

सुविचार

1. मनुष्य को हमेशा मौका नही ढूँढना चाहिए

क्योंकि जो आज है, वही सबसे अच्छा मौका हैं |

2. मनुष्य के पास जो नहीं हैं उसके लिए उसे दुखी नही होना चाहिए |

उसके पास जो है, जितना है, उसे उसी में खुश रहना चाहिए |

3. मनुष्य जब तक नहीं हारता

जब तक वह खुद से नहीं हार जाता |

4. जब तक हम किसी काम को करने की कोशिश नहीं करते

तब तक हमे वह काम नामुमकिन ही लगता है |

5. उठो जागो और तब तक मत रुको,

जब तक लक्ष्य की प्राप्ति ना हो जाए |

नाम – अद्विका

कक्षा- 8 ब

माँ का प्यार

माँ का प्यार बहुत निराला ,
उसने ही है मुझे संभाला |
मेरी माँ बहुत प्यारी,
मेरी माँ बहुत निराली |
क्या मैं उनकी बात बताऊँ ?
सोचूँ ! उन्हें कैसे मैं जान पाऊँ ?

सुबह सवेरे मुझे उठाती ,
संस्कृति कहकर मुझे जगाती |
जल्दी से मैं तैयार होती ,
उसके कारण स्कूल जा पाती |
स्कूल से आते ही खुश होती ,
जब माँ का चेहरा दिखता |
पोष्टिक भोजन मुझे खिलाती ,
ग्रहकार्य भी पूरा करवाती |

मुझ पर गुस्सा जब है आती ,
दो मिनट में उड़ भी जाती |
मेरी माँ मेरी जान ,
रखती मेरा पूरा ध्यान |
मेरी माँ का प्यार निराला ,
उसने ही मुझे संभाला |

संस्कृति जे॰ के॰
कक्षा - 8 अ

निसर्ग

कितना प्यारा निसर्ग हमारा |
कितनी प्यारी देन है इसकी
सूरज की किरने सुनहरी
चंद्रमा ने अपनी रोशनी बिखेरी |
कही है झरने कही है नदियां |
कही है फूल तो कही है कलियाँ |
मीठे बोल बोल रही है कोयल काली
झूम रही है डाली डाली |
उड़ रहे पंछी होके आकाश में चमन |
जब से आया संसार में मानव |
तब से बन गया वो दानव |
काट दिया है पेड़ पौधो को |
उजड़ रहा पर अपने निसर्ग को
न पेड़ रहेंगे न रहेगा सावन
सावन न रहा तो न रहेगा पानी
जहरीले धुएँ से लिख रहा मानव
इस निसर्ग कि नई कहानी
ऐसा न हो कि वो दिन भी आ जाए
कि निसर्ग सिर्फ तस्वीर मे रह आए |

रितेश चौगुले 4 --- b

केंद्रीय विद्यालय

हम पढ़ते है जहाँ
हमारी जान वह केंद्रीय विद्यालय है |
जहाँ सरस्वती का आवास है,
जिसके हर बात खास है ,
वह स्वर्ग हमारा केंद्रीय विद्यालय है |

यह विद्यालयों का साम्राज्य है |
जो विधा का साम्राज्य है |
जहाँ पढ़ते हैं हजारों बच्चे ,
जो बनेंगें नागरिक सच्चे |

यह ज्ञान का हैं एक सागर
जहाँ खिल रहे हजारों मोती ,
यह पढ़ाता जीवन की नीति हैं
हर दिन नवीन रंग और गीत हैं |

यहाँ हर तरफ आनंद और उल्लास है
हमारी जान केंद्रीय विद्यालय है |

प्रज्वल म पाटील ----- viii b

शिक्षक का महत्व

एक बार स्कूल का एक अध्यापक अपने शिष्यों को सूरजमुखी के बीज देकर उसका पौधा उगाने और उसकी देखभाल करने के लिए कहते है | सभी शिष्यों को यह कार्य ज्यादा पसंद नहीं आता लेकिन इनमे से एक शिष्य को ये कार्य बहुत बहुत प्यारा लगता है और वह बड़ी उत्सुकता से इन बीजो को बोता है और कई दिनो तक इनकी देखभाल करता है तब है जब पौधा उगना शुरू हो जाता है तब लड़का अपना संयम खो देता है और अपने अध्यापक के पास जाकर कहता है | क्या में इस पौधो को उखाड़ सकता हूँ अध्यापक अपने शिष्य से कहता है कि उसे अपने पौधे को लगा रहने देना चाहिए और उसकी देखभाल करते रहना चाहिए इससे वो केवल एक सूरजमुखी से कई बीज ले पयोगे ,इससे लड़का निराश हो जाता है लेकिन सूरजमुखी कि देखभाल करता रहता है फिर भी वो इसे उखड़ने के लिये बेताब होता रहता है और अपने अध्यापक से इसे उखाड़ने कि अनुमति मांगता रहता है , इसके बावजूद अध्यापक उसे समय रखने पहला बीज निखलता है लड़का उस पौधे को तोड़ देता है ताकि उस खा सके लेकिन पौधा अभी हरा ही होता है और बीज अभी पका हुआ नहीं होता , इसलिए वह उसे नहीं खा पाता जिससे ये लड़का पौधे को तबाह कर देता है ,इस प्रकार जिस सूजमुखी के पौधों के लिए वह इतनी मेहनत करता है और उसकी कई समय तक देखभाल करता है अपने गुरु का कहा ना मानने पर उसमे असफल रहता है | इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें बड़ो की बात मनानी चाहिए |

ईशिता -iv ब

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

मत मारो तुम कोख में इसको
इसे सुंदर जग में आने दो
छोड़ो तुम अपनी सोच पुरानी
एक माँ को खुशी मनाने दो
बेटी के आने पर अब तुम
घी के दिये जलाओ
आज ये संदेश पूरे जग में फैलाओ
बेटी बचाव बेटी पढ़ाओ |
लक्ष्मी का कोई रूप कहे है
कोई कहता दुर्गा काली
फिर कायोना कोई चाहे घर में
इक बिटिया प्यारी ,प्यारी
धन्य कर दे जीवन सबका
जो तुम इस पर प्यार लुटाओ
आज ये संदेश पूरे जग में फैलाओ
बेटी बचाव बेटी पढ़ाओ |
ये आकाश में गोते लगाती
यही तो कहलाती मर्दानी
यही तो है कल्पना चावला
यही तो है झाँसी की रानी
इसको देखकर पूरी शिक्षा
अपना कर्तव्य निभाओ
आज ये संदेश पूरे जग में फैलाओं
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ |

हाथों में राखी ये बांधे
घर में बहू बन आए
बन कर बेटी शैतानी करे
माँ बनकर ये समझायें
इसका तुम सम्मान कारों
और सब को यही सिखाओं
आज ये संदेश पूरे जग में फैलाओ
बेटी बचाव बेटी पढ़ाओ |

बिन बेठीके सोचो की
ये दुनिया कैसी होगी
न बहनों की राखी होगी
जिस कदम से रुक जाये दुनिया
वो कभी भी न उठाओ
आज ये संदेश पूरे जगमें फैलाओं
बेटी बचाव बेटी पढ़ाओ |

बदलो ये आदत हा जो
अब भी बदली ,जाती
बेटी तो बांटे दौलत सारी
बेटी है दर्द बाटती
मत फर्ज से पीछे भागों
अपनी आवाज उठाओ
आज ये संदेश पूरे जगमें फैलाओं
बेटी बचाव बेटी पढ़ाओ |

यूसेरा रुकडीकर
नवीं अ

कविता - पाठ

केन्द्रीय विद्यालय चिक्कोडी
हिन्दी पखवाडा

कविता - पाठ